दोस्तों,

मैं बबलू एक बार फिर अपनी नई कहानी लेकर हाजिर हूं। मेरी पिछली कहानी मि. दिवाना एवं आरती के साथ मजा सबको बहुत पसंद आई जिसके लिये बहुत मेल आये। इस बार मैं फिर मस्त कहानी लेकर हाजिर हूं।

अपना ग्रेजुऐशन पूरा करने के बाद मैं नौकरी की तलाश करने लगा। अच्छी नौकरी के लिये अनुभव नहीं होने से मैं बेकार था। इसलिए मैंने एक स्कूल में बतौर टीचर बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। स्कूल नर्सरी से आठवीं तक के बच्चों का था। उस स्कूल में मेरे अलावा 3 पुरूष अध्यापक एवं 4 महिला अध्यापक थे। स्कूल संस्थापक श्रीमती सरिता थी जिनकी उम्र 35 के आसपास थी और उनके 2 बच्चे थे। उन्हें बड़ी टीचर के नाम से संबोधित किया जाता था। एक महिला टीचर रागिनी को छोड़कर सभी टीचर की उम्र 30 के पार थी। केवल मैं और रागिनी ही कम उम्र के थे। हालांकि रागिनी उम्र में मुझसे 3 से 4 साल बड़ी थी। स्कूल में मेरी सबसे अच्छी पहचान हो गई। हम उम्र होने के कारण रागिनी की मुझसे अच्छी पटती थी। हम दोनो खूब बातें करते। रागिनी सलवार सूट पहनकर आती थी और बहुत खूबसूरत लगती थी। साड़ी पहनकर आती तो कयामत ढ़ा देती और उसके मस्त फीगर देखकर उसे बाहों में भरने को जी चाहता था।

स्कूल दो शिफ्ट में लगता था। सुबह 8:00 से 12:00 तक की शिफ्ट में चौथी से लेकर आठवीं तक तथा 12:30 से 4:30 तक नर्सरी से तीसरी क्लास लगती थी। मैंने देखा कि सभी टीचर यहां तक कि बड़ी मैडम भी, सब 4:30 बजे तक स्कूल से चले जाते थे लेकिन रागिनी अधिक देर तक रूकती। मेरे पूछने पर उसने बताया कि बड़ी मैडम मुझ पर विश्वास करती हैं इसलिये मैं 5.00 या 5.30 तक रूकती हूं और स्कूल बंद करके जाती हूं।

कई महिने ऐसे ही बीत गये पता ही नहीं चला। जनवरी का महीना चल रहा था जिसमें बहुत ठंड पड़ती है। एक दिन सभी टीचर स्कूल से छुट्टी होने पर जा चुके थे। मैं भी निकल गया था। केवल रागिनी और कुछ छोटे बच्चे वहां पर बचे थे। रागिनी उन बच्चों को अलग से आधा घंटा पढ़ाती थी। मैं सीधे मार्केट चला गया। वहां जाने पर मुझे याद आया कि मेरा स्वेटर मैं स्कूल में ही छोड़ आया हूं। अभी रागिनी वहां पर होगी इसलिये मेरा स्वेटर मुझे मिल जायेगा, यह सोचकर मैं वापस स्कूल आया क्योंकि शाम होते ही ठंड पड़ने लगी थी।

© 2008, www.antarvasna.com

स्कूल पहुंचने पर मैंने देखा कि मुख्य द्वार बंद है। मैंने हल्का सा धक्का दिया तो दरवाजा खुल गया। लेकिन अंदर कोई नहीं था। मैं सेकेण्ड फ्लोर पर गया वहां एक कमरे में अजीब सी आवाज आ रही थी। कमरा अंदर से बंद था। मैंने सोचा कि दरवाजा खटखटाउं लेकिन अजीब सी आवाज आने के कारण मैं सोच में पड़ा हुआ था। आखिर मैंने एक कुर्सी उठाई और उस पर चढ़कर ऊपर के रोशनदान में से कमरे के अंदर झांका। अंदर झांकने पर मेरे होश ही उड़ गए। अंदर रागिनी नंगी खड़ी थी और उसके साथ तीन बच्चे जिनकी उम्र पांच या छः साल के आसपास होगी वो भी नंगे थे। रागिनी सीधी खड़ी थी और एक बच्चा उसकी चूत में मुंह देकर उसका कामरस चूसने में लगा था। एक बच्चा टेबल के ऊपर खड़ा था जिसका लंड, लंड क्या उसकी नुन्नी रागिनी मजे से लॉलीपॉप की तरह चूस रही थी और एक बच्चा रागिनी के बूब्स को मुंह में लेकर चूस रहा था।

मैं यह देखकर बुरी तरह चौंक गया। मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था कि रागिनी ऐसी होगी। इधर रागिनी ने एक बड़ी सी चॉकलेट का रेपर खोला और उसे लेकर अपनी चूत, बूब्स और अपने होंठों पर लगा ली। बच्चे बारी बारी से तीनो जगह को मजे लेकर चूस रहे थे। रागिनी भी चॉकलेट को उनकी नुन्नी पर लगा लगाकर चूस रही थी। उनका यह खेल देखकर मेरा लंड तनकर कड़क हो गया। मैं टेबल से नीचे उतर गया। मेरी सांसे भी तेज चल रही थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। आखिर मैंने हिम्मत करके दरवाजा खटखटा दिया। दरवाजा खटखटाने से रागिनी चौंक गई। थोड़ी देर बाद उसने बच्चों को और खुद कपड़े पहनकर दरवाजा खोला। मैंने रागिनी को ध्यान से देखा, उसने ब्रा नहीं पहनी थी, जल्दी में केवल ब्लाउज और पेटीकोट के ऊपर साड़ी पहन ली।

अरे बबलू! तुम वापस कैसे आए? रागिनी ने आश्चर्य से पूछा। मैंने कहा कि मैं अपना स्वेटर यहीं भूल गया था उसे ही लेने आया था। सोचा कि तुम यहां होगी तो स्वेटर मिल जायेगा। वैसे तुम इन्हें अभी तक क्या पढ़ा रही हो?

यह सुनकर रागिनी थोड़ा सकपकाई, फिर संभलकर बोली – अरे इन्हें तो सब पढ़ाना पड़ता है। बहुत ही कमजोर हैं पढ़ाई में।

अच्छा। अब तुम जैसी सुंदर और समझदार टीचर है तो ये भला कमजोर कैसे हो सकते हैं? मैंने कहा।

उनका खेल देखकर मेरा लंड अभी भी तना हुआ था। मैं यह मौका छोड़ना नहीं चाहता था। मैं किसी भी तरह आज रागिनी का चोदना चाहता था क्योंकि अब मैं बहुत गरम हो गया था। उससे बातें करते करते मैंने उसके होंठों को चूम लिया। रागिनी हकलाकर बोली – बबलू तुम यह क्या कर रहे हो। तुम एक टीचर

© 2008, www.antarvasna.com

हो और बच्चे भी सामने खड़े हैं। मैं बोला – अच्छा, और तुम इन बच्चों के साथ क्या कर रही थी इतनी देर से। वह ठीक है क्या?

मैंने क्या किया है? मैं तो इन्हें पढ़ा रही थी। रागिनी बोली।

झूठ मत बोलो। मैने खिड़की से झांककर सब देख लिया है और तुम्हें देखकर मैं गरम हो गया हूं और तुम्हें चोदना चाहता हूं। मैं बिना रूके रागिनी से कहता गया।

क्या? तुमने सब देख लिया। उफ्, क्या तुम सचमुच मुझे चोदना चाहते हो? रागिनी बोली।

हां मेरी रानी, यह कहकर मैंने उसे बाहों में भर लिया और अपने होंठ उसके रसीले होंठों पर रख दिये। उसके होंठों से चॉकलेट का स्वाद आ रहा था और मैं बेरहमी से उन्हें चूस रहा था। साथ ही साथ अपनी जीभ उसके मुंह में दे रहा था। वह भी मेरा साथ देते हुए मेरे होंठों और जीभ को मुंह में लेकर मेरे रसपान कर रही थी। उसे मजा आ रहा था। हम दोनो ने एक दूसरे के होंठों की मां चोद दी।

बच्चे अभी सामने खड़े यह नजारा देख रहे थे। रागिनी ने उन सब बच्चों को बाहर बैठाया और वापस कमरे में आकर दरवाजा बंद कर दिया। वह फिर मेरी बाहों में आकर मेरे होंठों को चूसने लगी। मैंने उसके होंठों को चूसते हुए उसकी साड़ी उतारनी शुरू कर दी। अब वह केवल ब्लाउज और पेटीकोट में थी। मैं अपने होंठों को उसके होंठों से नीचे लेकर आया और उसकी गर्दन को चूमते हुए उसकी चूचियों को मुंह में भर लिया। फिर उसके पेट पर मुंह फिराने लगा। मैंने उसके ब्लाउज को खोला और उसके बूब्स को अपने मुंह में भर लिया। वह आहहह आहहहहह करने लगी। उसका सिसकना मुझे अच्छा लगा। मैं और जोर से उसके निप्पल चूसने लगा। निप्पल चूसते चूसते ही मैंने उसके पेटीकोट का नाड़ा खोल दिया। नाड़ा खोलते ही रागिनी पूरी नंगी हो गई क्योंकि उसने जल्दी में पैंटी भी नहीं पहनी थी। उसकी मस्त गुलाबी क्लीन शेव्ड चूत देखकर मैंने उस पर अपने होंठ रख दिये। रागिनी ने मेरा सर अपने हाथों से अपनी चूत की ओर धकेला। मैं जीभ निकालकर उसकी चूत चाटने लगा। उसकी चूत की खुश्बू से मदहोश सा हो रहा था। 10 मिनट तक उसकी चूत चूसता रहा जिससे वह झड़ गई और मैंने उसका सारा कामरस चाट लिया। फिर वापस उसके होंठों को चूसकर उसके कामरस का स्वाद उसे भी करवाया।

अब रागिनी की बारी थी। वह मेरे कपड़े खोलने लगी। मेरी शर्ट, बनियान फिर मेरी पैंट भी उसने खोल दी। अब मैं सिर्फ अपने अण्डरवियर में था जिसमें मेरा लंड तना हुआ खड़ा था। उसने ऊपर से मेरे लण्ड पर हाथ फिराया। उसने

© 2008, www.antarvasna.com

मुझे फर्श पर बिछी दरी पर लेटा दिया और मेरे ऊपर चढ़ गई। वह तेजी से मेरे गालों पर और होंटों पर चुम्बनों की बौछार कर रही थी। उसने मेरे गालों और होंठो को कच्ची कलियों की तरह चूसना जारी रखा। वह मेरे सीने को अपने होंठों से गर्म करने लगी और फिर मेरे निप्पल को अपने मुंह में लेकर चूसने लगी जिससे मैं तड़प उठा। लेकिन उसने मेरी निप्पलों को चूसना नहीं छोड़ा। बहुत देर तक मेरे दोनो निप्पलों को चूसकर उसने लाल कर दिये। फिर मेरे पेट पर मेरी नाभी को मुंह में भरकर खूब अपने होंठ फिराये। आखिरकार उसने मेरा अण्डरवियर खोला और मेरे लण्ड को अपने होंठों से दबा दिया। हम दोनो में एक आग सी लग गई थी। अब उसने मेरे लौड़े को मुंह के अंदर बाहर करना चालू कर दिया। अब मैं बुरी तरह तड़प रहा था। उसने अपनी गति और तेज कर दी जिसकी वजह से मैं और तड़पने लगा। मेरे मुंह से भी आहहह आहहहहह की आवाज निकलने लगी। ऐसे लग रहा था कि वो मुझे ही चोद रही है। बहुत देर चूसने के बाद मेरा शरीर अकड़ा और सारा माल उसके रसीले होंठों और उसके रस से मिलते हुए उसके मुंह में से अंदर जाने लगा। उसने मेरा सारा रस चूस लिया। उसके होंटों पर अभी भी मेरा लंड का रस लगा हुआ था। उसने उसी हालत में मेरे होंठों को अपने होंठों से भींच लिया। मैं पहली बाहर अपने कामरस का स्वाद चख रहा था। बहुत ही खुश्बूदार और नमकनी जायका था।

अब दोनों पूरे नंगे थे और एक दूसरे के शरीर से चिपके हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे हम दोनो एक दूसरे के शरीर में ही घुस जायेंगे। रागिनी मेरे शरीर के ऊपर 69 की पोजिशन में आ गई जिससे उसकी चूत मेरे मुंह में और मेरा लण्ड उसके मुंह में था। इस बार वह जल्दी में थी। कुछ ही देर में उसने मेरा लण्ड खड़ा कर दिया। मैंने रागिनी को सीधा लिटाया और उसके ऊपर आकर अपना लण्ड उसकी चूत के ऊपर रगड़ने लगा। वह फिर तड़प रही थी। मैं उसे और तड़पाना नहीं चाहता था। मैंने लंड को धक्का दिया और आधा लंड उसकी चूत में चला गया। चूत गीली थी फिर भी वह चीख रही थी। मैंने फिर एक धक्का दिया और झुककर उसके होंठों को अपने होंठो से दबा दिया ताकि वह जोर से न चीखे। पूरा लण्ड उसकी सील तोड़ता हुआ चूत में समा गया। धीरे धीरे अपना लण्ड उसकी चूत के अंदर बाहर करने लगा। उसका दर्द कम हुआ और उसे मजा आने लगा। वह भी अपनी गांड उचका उचकाकर साथ देने लगी। मैंने उसकी कमर पकड़ी और तेज धक्के देना चालू कर दिया। उसका शरीर हिलने लगा। मैंने अपनी रफ्तार कायम रखी। उसकी मुंह से सिसकियां लगातार निकल रही थी। हम दोनो जैसे स्वर्ग में पहुंचकर कीडा कर रहे थे। ठंड का समय था लेकिन हम दोनो ही पसीने पसीने होकर चुदाई में मस्त थे। 10–15 मिनट में वह 2 बार झड़ गई और फिर झड़ने वाली थी। मैं भी झड़ने वाला था। मैंने अपनी रफ्तार तेज की और सारा वीर्य उसकी चूत में भर दिया। हम दोनो ही ठण्डे होकर लेट गये। थोड़ी देर बाद तैयार हुए और उन बच्चों को घर पर छोड़ा जिनको दूसरे कमरे में बैठाया था।

© 2008, www.antarvasna.com

आज की रात मुझे नींद नहीं आई। सिर्फ रागिनी के ख्यालों में ही खोया रहा। अगले दिन स्कूल में वह काली कलर की साड़ी में खूब सज धजकर आई थी। उसकी आंखों में एक चमक और होंठों पर मुस्कुराहट थी जो सिर्फ मेरे लिए थी। उस दिन स्कूल बंद होने के बाद हमने बच्चो को जल्दी घर पर छोड़ दिया। हम दोनो वापस स्कूल में आये और नंगे होकर फिर चुदाई में लग गये। उसकी चूत चोदने के बाद मैं उसकी गांड के पीछे लग गया। जैसे–तैसे वह तैयार हुई। रागिनी दूसरे कमरे में रखा एक तेल लेकर आई जिसे मैंने अपने लंड पर लगाया और उसकी गांड में भर दिया। उसे मैंने कुतिया की बैठाया और उसकी गांड पर लंड रगड़ने लगा। मैंने उसकी गांड के छेद पर लंड रखकर धक्का दिया। वह जोर से चीखी पर मैंने हल्के हल्के धक्के देना जारी रखा और फिर एक जोर का धक्का दिया जिससे पूरा लंड उसकी गांड में फिसलता हुआ अंदर तक गया। वह अभी भी चीख रही थी। कुछ देर लंड को अंदर बाहर करने पर उसका दर्द कम हुआ और उसे मजा आने लगा। गांड उसकी चूत से भी टाईट थी। दस मिनट तक उसकी गांड मारने के बाद उसकी गांड में ही वीर्य को भर दिया।

इस प्रकार हम दोनो ने महीने भर खूब मजे लिये। बदनामी के डर से हम दोनो ने ही शहर छोड़ दिया और अलग–अलग शहरों में जाकर रहने लगे ।

दोस्तों, आपको यह कहानी कैसी लगी। मेरे ईमेल mr.deewana_tera@rediffmail.com पर जरूर बताईयेगा ।

© 2008, www.antarvasna.com